


---

bindumAdhavAShTakam

——  
बिन्दुमाधवाष्टकम्

——  
Document Information



---

Text title : bindumAdhavAShTakam

File name : bindumaadhava8.itx

Category : aShTaka, vishhnu, krishna, vishnu

Location : doc\_vishhnu

Author : Traditional

Transliterated by : WebD

Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

Latest update : January 13, 2005

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



बिन्दुमाधवाष्टकम्



श्री गणेशाय नमः ।

कविन्दजातटाटवीलतानिकेतनान्तर-  
प्रगल्भवल्लविस्फुरद्रतिप्रसङ्गसङ्गतम् ।  
सुधारसार्द्रवेषुनादमोदमाधुरीमद-  
प्रमत्तगोपगोम्रजं भजामि बिन्दुमाधवम् ॥ १ ॥

गदारिशङ्खभयकशाङ्गभृशतुष्करं कृपा-  
कटाक्षवीक्षाणामृताक्षितामरेन्द्रनन्दनम् ।  
सनन्दनादिभौनिमानसारविन्दमन्दिरं  
जगत्पवित्रकीर्तिदं भजामि बिन्दुमाधवम् ॥ २ ॥

द्विगीशमौलिनूत्तरत्ननिःसरत्प्रभावली-  
विराजितांक्षिपद्भुजं नवेन्दुशेभराब्जजम् ।  
दयामरन्दतुन्दिलारविन्दपत्रलोचनं  
विरोधियूथभेदनं भजामि बिन्दुमाधवम् ॥ ३ ॥

पयः पयोधिवीथिकावलीपयःपृषन्मिलद्भुजङ्ग-  
पुङ्गवाङ्गकल्पपुष्पतल्पशायिनम् ।  
कटीतटिस्फुटीभवत्प्रतमडाटकाम्भरं  
निशाटकोटिपाटनं भजामि बिन्दुमाधवम् ॥ ४ ॥

अनुश्रवापडारकावलेपलोपनैपुष्पी-  
पयश्चरावतारतोषितारविन्दसम्भवम् ।  
मडाभवाब्धिमध्यमग्रहीनलोकतारकं  
विडङ्गराट्टुरङ्गमं भजामि बिन्दुमाधवम् ॥ ५ ॥

समुद्रतोयमध्यदेवदानवोत्क्षिपद्दरा-  
धरेन्द्रमूलधारणक्षमादिदूर्मवित्राडम् ।  
दुराग्रडावलमडाटकाक्षनाशसूकरं

छिरण्यदानवान्तकं भजामि बिन्दुमाधवम् ॥ ६ ॥

विरोचनात्मसम्भवोत्तमाङ्गुत्पदकम्  
परश्वधोपसंभृताभिलावनीशमण्डलम् ।  
कठोरनीलकण्ठकार्मुकप्रदर्शितादि-  
दोर्बलान्वितक्षितीसुतं भजामि बिन्दुमाधवम् ॥ ७ ॥

यमानुजोदकप्रवालसत्त्वरामिजित्वरं  
पुरासुराङ्गनाभिमाननूपलूपनायकम् ।  
स्वमण्डलाग्रमण्डनीययावनादिमण्डलं  
बलानुजं गदाग्रजं भजामि बिन्दुमाधवम् ॥ ८ ॥

प्रशस्तपञ्चयामराभ्यवृत्तभेदभासितं  
दशावतारवर्णनं नृसिंहभक्तवर्णितम् ।  
प्रसिद्धबिन्दुमाधवाष्टकं पठन्ति ये भृशं  
नरा सुदुर्लभं भजन्ति ते मनोरथं निरन्तम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीबिन्दुमाधवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

---

*bindumAdhavAShTakam*

pdf was typeset on December 22, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

